प्रादर्श प्रश्न पत्र 2012
विषय – इतिहास
कक्षा – बारहवीं

समय– 3 घंटे **पूर्णांक– 100**
Time- 3 Hours **Maximum Mark – 100**

निर्देश–

i. सभी प्रश्न अनिवार्य है।

ii. प्रश्न पत्र में दिये गये निर्देश सावधानी पूर्वक पढ़कर उत्तर लिखिए।

iii. प्रश्न 1 से 5 तक वस्तुनिष्ठ प्रश्न है जिनके अन्तर्गत रिक्त स्थानों की पूर्ति, सत्य/असत्य, सही जोड़ी बनाना, एक वाक्य में उत्तर तथा सही विकल्प का चयन करना है। प्रत्येक प्रश्न 5 अंक का है। 1x5= 5x5 = 25 अंक

iv. प्रश्न क्रमांक 6 से 21 तक में आन्तरिक विकल्प दिये गये है।

v. प्रश्न क्रमांक 6 से 12 तक प्रत्येक प्रश्न के लिए 4 अंक एवं प्रश्नों के उत्तर लगभग 75 शब्दों में लिखना है।

vi. प्रश्न क्रमांक 13 से 19 तक प्रत्येक प्रश्न के लिए 5 अंक एवं प्रश्नों के उत्तर लगभग 120 शब्दों में लिखना है।

vii. प्रश्न क्रमांक 20 तथा 21 में प्रत्येक प्रश्न पर 6 अंक एवं प्रश्नों के उत्तर लगभग 150 शब्दों में लिखना है।

Instructions –

i. All question are compulsory.

ii. Please read the instructions carefully before writing the answer.

iii. Q. No. 1 to 5 are objective type which contain fill up the Blank, True/False, match the column, one sentence answer and choose the correct answers. Each question is allotted 5 marks. 1x1 = 5x5 =25 Marks.

iv. Internal options are given in Q. No. 6 to 21.

v. Q. No. 6 to 12 carry 4 marks each and answer should be given in about 75 words.

vi. Q. No. 13 to 19 carry 5 marks each and answer should be given in about 120 words.

Q. No. 20 and 21 carry 6 marks each and answer should be given in about 150 words.

वस्तुनिष्ठ प्रश्न
Objective Type Questions

प्रश्न 1. सही विकल्प चुनकर लिखिए।

(अ) पहिए का आविष्कार हुआ था।

(i) पुरापाषाण काल में (ii) मध्यपाषाण काल में

(iii) नवपाषाण काल में (iv) आधुनिक काल में

(ब) खजुराहों के प्रसिद्ध मंदिरों का निर्माण किसने कराया था –

(i) चन्देल शासकों ने (ii) परमार शासकों ने

(iii) प्रतिहार शासकों ने (iv) चौहान शासकों ने

(स) तैमूर के आक्रमण के समय दिल्ली का सुल्तान था –

(i) फिरोज तुगलक (ii) मुहम्मद तुगलक

(iii) ग्यासुद्दीन तुगलक (iv) नासिरूद्दीन महमूद।

(द) गांधी जी ने किस गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया था?

(i) प्रथम (ii) द्वितीय

(iii) तृतीय (iv) किसी में नहीं

(इ) रानी अवन्ती बाई का संबंध किस रियासत से था –

(i) ग्वालियर (ii) गढ़मंडला

(iii) रामगढ़ (iv) झांसी

Selected the correct answer :-

(a) The wheel was discovered in -

(i) Pre Stone Age (ii) Mid Stone Age

(iii) New Stone Age (iv) Modern Age.

(b) Who constructed the famous temples of Khajuraho -

(i) Chandel Rulers (ii) Parmar Rulers

(iii) Pratihar Rulers (iv) Chauhan Rulers.

(c) During the invasion of Taimur Emperor of Delhi was -

(i) Firoz Tughlag (ii) Mohd. Tughlaq

(iii) Gyasuddin Tughlaq (iv) Nasiruddin Mahmood

(d) Gandhi Participated in which Round Table Conference?

(i) First (ii) Second

(iii) Third (iv) None of these.

(e) With which state Rani Awanti Bai was related -

(i) Gwalior (ii) Garh Mandla

(iii) Ramgarh (iv) Jhansi

प्रश्न 2. सही जोड़ियां बनाइये–

	अ	–	ब
(अ)	अक्षावाप	–	विदेश मंत्री
(ब)	भागदुध	–	सैनिक परामर्शदाता
(स)	संग्रहीता	–	आय–व्यय का लेखा जोखा रखने वाला
(द)	मीर बख्शी	–	कर संग्रहकर्ता
(इ)	सुमन्त	–	कोषाध्यक्ष

Match the Correct pairs :-

	A	-	B
(a)	Akshavap	-	Foreign Minister
(b)	Bhagdudh	-	Military Advisor
(c)	Sangrahita	-	Accountant
(d)	Meerbakshi	-	Tax Collector
(e)	Sumant	-	Treasury Officer

प्रश्न 3. निम्नलिखित रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

(i) पृथ्वीराज रासो नामक ग्रंथ के रचयिता .....थे।

(ii) गौतम बुद्ध के बचपन का नाम.....था।

(iii) ''कर्पूर मंजरी'' नामक ग्रंथ की रचना.....ने की थी।

(iv) लोदी वंश का अंतिम शासक.....था।

(v) तिंगवा का विष्णु मंदि म.प्र. के.....जिले में स्थित है।

Fill in the blanks of following :-

(i) Author of the book "Prithviraj Raso" was.....

(ii) In his childhood the name of Gautam Buddha was.....

(iii) .....was the author of Karpur Manjari.

(iv) .....was the last Sultan of Lodhi dynasty.

(v) Vishnu Temple of Tingwa is situated in the.....district of M.P.

प्रश्न 4. एक वाक्य में उत्तर दीजिए।

1. अजमेर में किस प्रसिद्ध सूफी सन्त की दरगाह है?
2. अभिमत भारत नामक क्रांतिकारी संगठन की स्थापना किसने की थी?
3. भारत में होमरूल आंदोलन कब प्रारंभ हुआ?
4. उदयगिरि की गुफाएं म.प्र. के किस जिले में स्थित है?
5. सांची के स्तूप का निर्माण किस शासक ने कराया था?

Write Answer in one word.

1. Which famous Sufi Saint's Dargaha is in Ajmer?
2. Who founded Revolutionary organisation named "Abhinav Bharat"?
3. When Home Rule Movement started in India?
4. In which district of M.P. the caves of Udayagiri are situated?
5. Who built the "Stupa of Sanchi"?

प्रश्न 5. निम्नलिखित के सत्य/असत्य लिखिए –

(i) ''रामायण'' की रचना गोस्वामी तुलसीदास ने की थी?

(ii) मामल्लपुरम् (महाबलिपुरम) के रथ मंदिरों का निर्माण चालुक्य शासकों ने करवाया था।

(iii) पल्लवों की राजधानी कांची थी।

(iv) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रथम अध्यक्ष सुरेन्द्र नाथ बैनर्जी थे।

(v) विदिशा को प्राचीनकाल में बेसनगर के नाम से जाना जाता था।

Write in true / false of the following .

(i) Goswami Tulsidas wrote Ramayana.

(ii) Rath temples of Mamallpuram (Mahabalipuram) were built by chalukya kings .

(iii) Kanchi was the Capital of Pallawas.

(iv) The First President of Indian National Congress was Surendranath Benerji.

(v) In dncient times Vidisha was known as Ves Nagar.

प्रश्न 6. मोहनजोदड़ो के सार्वजनिक स्नानागार पर संक्षिप्त में लिखिए।

Write a short note on Public bath of Mohenjodaro.

अथवा

Or

बौद्ध धर्म के चार आर्य सत्य के विषय में आप क्या जानते है?

What do you know about four noble truths of Buddhism?

प्रश्न 7. मौर्य कालीन इतिहास की जानकारी में सहायक साहित्यिक स्त्रोतों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

Give brief introduction about literary sources of Mauryan History.

अथवा

Or

गांधार कला शैली की प्रमुख विशेषताएं लिखिए?

State the important features of Gandhar Style of Art.

प्रश्न 8. गुप्तकाल में हुई वैज्ञानिक प्रगति का संक्षिप्त विवरण दीजिए।

Write short description on scientific progress during Gupta Period.

अथवा

Or

''हर्ष वर्धन शिक्षा तथा साहित्य का अनुरागी था।'' स्पष्ट कीजिए।

"Harsha was the lover of education and literature". Justify.

प्रश्न 9. पृथ्वीराज चौहान का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

Give brief introduction of Prithviraj Chauhan.

अथवा

Or

पल्लव वास्तुकला की ''मामल्ल–शैली'' के विषय में आप क्या जानते है?

What do you know about "Mamall style" of Pallav Architecture.

प्रश्न 10. औरंगजेब के सिक्खों से कैसे संबंध थे?

Explain the relation of Aurangzeb with Sikhs.

अथवा

Or

औरंगजेब के विरुद्ध जाटों के संघर्ष का संक्षिप्त विवरण दीजिए।

Deceribe briefly about the Jat's struggle against Aurangzeb.

प्रश्न 11. जय सिंह व शिवाजी के मध्य हुई पुरन्दर की संधि की शर्तों का उल्लेख कीजिए।

Mention the conditions of Treaty of Purander held between Jai Singh and Shivaji.

अथवा

Or

'चौथ' और 'सरदेशमुखी' के विषय में संक्षिप्त में लिखिए?

What do you Know about Chauth and Surdeshmukhi ? Write.

प्रश्न 12. भारत में पुर्तगालियों के पतन के चार कारण लिखिए।

Explain any four reasons for decline of Portuguese in India.

अथवा

Or

आधुनिक काल के इतिहास जानने के साधनों की विवेचना कीजिए।

Discuss the sources of the Modern History?

प्रश्न 13. नवपाषाण व पुरापाषाण काल के मध्य क्या अंतर थे? लिखिए।

What were the differences between the Neolithic period and the Palaeolithic period? Explain.

अथवा

Or

विदेशी यात्रियों के विवरणों से प्राचीन भारतीय इतिहास की क्या जानकारी प्राप्त होती है? स्पष्ट कीजिए।

What information do we get about ancient Indian history from the account of foreign travellers.

प्रश्न 14. मध्यकाल में हुए भक्ति आन्दोलन की प्रमुख विशेषताएं लिखिए।

Describe the main characteristics of Bhakti Movement in Medieval period.

अथवा

Or

''बलबन गुलाम वंश का सर्वश्रेष्ठ शासक था।'' स्पष्ट कीजिए।

"Balban was the best ruler of the Slave dynasty". Explain.

प्रश्न 15. औरंगजेब की दक्षिण नीति के विषय में आप क्या जानते है? व्याख्या कीजिए।

What do you know about Southern policy of Aurangzeb? Explain.

अथवा

Or

अकबर की धार्मिक नीति को स्पष्ट करते हुए उसके कोई पांच परिणाम लिखिए?

Explain the religious policy of Akbar and write its results .

प्रश्न 16. शिवाजी की अष्टधान व्यवस्था के विषय में लिखिए।

Write about the Ashtadhan system of Shivaji.

अथवा

Or

मराठों के उत्कर्ष के प्रमुख कारणों का उल्लेख कीजिए।

Explain the main causes of rise of Marathas?

प्रश्न 17. ''स्थायी बन्दोबस्त के विषय में आप क्या जानते है? संक्षेप में लिखिए।

What do you know about permanent settlement? Write in brief.

अथवा

Or

पिट्स इंडिया एक्ट की प्रमुख धाराएं लिखिए।

Write the main clauses of Pitt's India Act.

प्रश्न 18. सन् 1857 ई. की क्रांति की असफलता के किन्हीं पांच कारणों का वर्णन कीजिए?

Describe any five reasons for the failure of revolution of 1857 A.D.

अथवा

Or

स्वामी विवेकानंद ने राष्ट्रीय जागरण में क्या योगदान दिया? संक्षिप्त में लिखिए।

Mention the contribution of Swami Vivekanand in the National Awakening.

प्रश्न 19. भारत के राष्ट्रीय आंदोलन में मध्यप्रदेश के योगदान को स्पष्ट कीजिए।

Mention the contribution of the Madhya Pradesh in the National Movement of India.

अथवा

Or

मध्यप्रदेश में स्थित गुप्त कालीन प्रमुख स्मारकों का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

Give brief introduction of main monuments of Gupta period situated at Madhya Pradesh.

प्रश्न 20. इलाहाबाद की संधि की शर्तों का उल्लेख करते हुए उसके महत्व को स्पष्ट कीजिए।

Explain the importance of the conditions of the Allahabad Treaty?

अथवा

Or

प्लासी के युद्ध के कारण तथा परिणामों का वर्णन कीजिए।

Describe the reasons and results of Battle of Plassey.

प्रश्न 21. माउण्टबेटन योजना के बारे में सविस्तार लिखिए।

Describe the Mountbatton plan in detail.

अथवा

Or

भारत छोड़ों आन्दोलन के क्या कारण थे? इस आंदोलन के क्या परिणाम हुए?

What were the reasons of Quit India Movement? Explain its results.

– – – – – –

आदर्श उत्तर

इतिहास
History

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

उत्तर 1. सही विकल्प

(i) नव पाषाण काल में।

(ii) चन्देल शासकों ने।

(iii) नासिरूद्दीन महमूद।

(iv) द्वितीय।

(v) रामगढ़।

(5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1 = 5)

उत्तर 2. सही जोडियां –

	अ	**–**	**ब**
(अ)	अक्षावाप	–	आय–व्यय का लेखा जोखा रखने वाला
(ब)	भागदुध	–	कर संग्रहकर्ता
(स)	संग्रहीता	–	कोषाध्यक्ष
(द)	मीर बख्शी	–	सैनिक परामर्शदाता
(इ)	सुमन्त	–	विदेश मंत्री

(5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1 = 5)

उत्तर 3. रिक्त स्थानों की पूर्ति :–

(i) चन्दबरदाई।

(ii) सिद्धार्थ।

(iii) राजशेखर।

(iv) इब्राहीम लोदी।

(v) जबलपुर।

(5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1 = 5)

उत्तर 4. एक वाक्य में उत्तर –

1. अजमेर में शेख मुईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह है।
2. ''अभिमत भारत'' नामक क्रांतिकारी संस्था की स्थापना विनायक दामोदर सावरकर ने की थी।
3. भारत में होमरूल आंदोलन सन् 1916 में प्रारंभ हुआ।
4. उदयगिरि की गुफाएं म.प्र. के विदिशा जिले में है।
5. सांची के स्तूप का निर्माण मौर्य सम्राट अशोक ने किया था।

(5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1 = 5)

उत्तर 5. सत्य/असत्य –

(i) असत्य

(ii) असत्य

(iii) सत्य

(iv) असत्य

(v) सत्य

(5 सही हल करने पर 5 अंक प्राप्त होंगे 1+1+1+1 = 5)

उत्तर 6. मोहनजोदड़ों के उत्खनन में एक विशाल स्नानागार मिला है। स्नानागार का जलाशय किले में स्थित था। इसकी लम्बाई 53 मीटर तथा चौड़ाई 36 मी. और गहराई 2.5 मीटर है। स्नानागार के चारों ओर चबूतरें तथा बरामदे बने हुए हैं। नीचे जाने के लिए सीड़ियां बनी है, फर्श पक्की ईटों का है और दीवारें चूने की बनी हुई है। एक कोने में 2 मीटर चौड़ी मौरी बनी हुई है जिसमें से होकर

जलाशय भरा और खाली किया जाता है। स्नानागार में जल भरने के लिए पास के कमरे में एक कुआं है। इसके दक्षिण–पश्चिम कोने में हम्माम बना हुआ है।

4 अंक

उपरोक्तानुसार लिखने पर पूर्ण 4 अंक प्राप्त होंगे–1+1+1+1=4

अथवा

बौद्ध धर्म के चार आर्य सत्य –

1. संसार दुखमय है।
2. दुख का कारण तृष्णा मोह माया है।
3. दुख निरोध का अर्थ है छुटकारा। तृष्णा पर विजय प्राप्त कर दुख से छुटकारा हो सकता है।
4. दुख निरोध के लिए अष्टांग मार्ग का अनुशरण करना चाहिए।

उपरोक्तानुसार बिन्दु लिखने कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 7. मौर्य कालीन इतिहास की जानकारी –

1. कौटिल्य अर्थशास्त्र से उस समय की राजनीति, न्याय, शासन व्यवस्था का ज्ञान होता है।
2. मेगस्थनीज की इंडिका से मौर्यकालीन शासन व्यवस्था का पता चलता है।
3. विशाखदत्त का मुद्राराक्षस से नंदवंश तथा मगध की क्रांति की जानकारी मिलती है।
4. अशोक के शिलालेख, चट्टानों तथा स्तम्भों पर खुदे लेख शासन व्यवस्था का ज्ञान कराते है।

4 अंक

उपरोक्तानुसार एवं अन्य कोई 4 बिन्दुओं को समझाने पर पूर्ण अंक प्राप्त होंगे–1+1+1+1=4

अथवा

गांधार कला की मुख्य विशेषताएं :–

1. गांधार कला के विषय भारतीय है तथा तकनीकी यूनानी है।
2. गांधार कला की मूर्तियां प्रायः स्लेटी पत्थर से निर्मित है।
3. इस शैली के अन्तर्गत बुद्ध को सिंहासन पर बैठे दिखाया गया है।
4. इस शैली में मूर्तियां सिलवटदार वस्त्र धारण किये है।

(उपरोक्तानुसार 4 बिन्दुओं का विस्तार करने पर 2 अंक कुल पूर्ण 4 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 8. गुप्तकाल में अंकगणित, रेखाचित्र, बीजगणित, चिकित्साशास्त्र, रसायन शास्त्र एवं ज्योतिष विज्ञान की उन्नति हुई। इस काल के महान गणितज्ञ आर्य भट्ट ने अपने ग्रन्थ ''आर्य भट्टीयम्'' में दशमलव प्रणाली का वर्णन किया है और अंकगणित व बीजगणित के अनेक सिद्धांत प्रतिपादित किए है।

आर्य भट्ट ने प्रमाणित किया कि पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है तथा पृथ्वी व सूर्य के मध्य चन्द्रमा आ जाने से ग्रहण होता है। गुप्त काल के ज्योतिषाचार्य व धातु विज्ञान के पण्डित वराह मिहिर ने अपनी रचना ''वृहत्संहिता'' में नक्षत्र, वनस्पतिशास्त्र, भूगोल आदि विषयों का विशद विवेचन किया है।

ब्रम्हगुप्त नक्षत्र वैज्ञानिक थे, जिन्होंने प्रमाणित किया कि सभी वस्तुएं पृथ्वी पर गिरती है और पृथ्वी सभी वस्तुओं को अपनी ओर खींचती है।

गुप्तकाल में धातु विज्ञान विकसित थी। दिल्ली के समीप महरौली में कुबुबमीनार के पास स्थित लौहस्तम्भ गुप्तकाल का है इस लौह स्तम्भ में अभी तक जंग नहीं लगा है।

गुप्त काल में चिकित्सा विज्ञान, मूल्य विज्ञान, पशु विज्ञान पर अनेक ग्रन्थ लिखे गए। जिसमें हस्ति–आयुर्वेद, अश्व–शास्त्र, नवनीतकम् आदि है।

(उपरोक्तानुसार वर्णन किये जाने पर पूर्ण 4 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

धर्म परायण शासक के रूप में हर्ष का मूल्यांकन :–

हर्ष प्रारंभ में ब्राह्मण धर्म में आस्था रखता था परंतु बाद में वह बौद्ध धर्म का अनुयायी हो गया था परंतु उसने अपनी धार्मिक नीति को सदा उदार रखा। अन्य शब्दों में उसने सभी धर्मों के प्रति उदार नीति का पालन किया। वह सभी धार्मिक संस्थाओं को दान देता था।

हर्ष एक धर्म परायण शासक था। वह अशोक की भांति धार्मिक क्षेत्र में अत्यंत सहिष्णु था। वह सभी धर्मों का आदर करता था। हर्ष अपने साम्राज्य में प्रत्येक पांच वर्ष के अंतराल पर महामोक्ष परिषद (धार्मिक सभा) का आयोजन करता था। ह्येनसांग ने प्रयाग में आयोजित हर्षवर्धन की छठी महा मोक्ष परिषद देखी थी। इसमें सभी धर्मों के धर्मोचार्य और अनुयायी सम्मिलित हुए थे। हर्ष की धार्मिक नीति के संबंध में चीनी यात्री ह्येनसांग ने लिखा है–'सम्राट हर्ष ने भारत में मांसाहार बंद करा दिया तथा जीवों को कठोर शारीरिक दड देने की मनाही कर दी। इसने गंगा घाट पर हजारों स्पूतों का निर्माण करवाया और अपने सम्पूर्ण राज्यो में यात्रियों के लिए विश्राम गृह बनवाए। पवित्र बौद्ध स्थानों पर विहारों की स्थापना करवायी। वह निर्यामत रूप से पंचवर्षीय दान–वितरण का आयोजन करता था और धर्म निमित्त अस्त्र शस्त्रों के अतिरिक्त अपना सर्वस्य दान कर देता था। उसने स्पूत विहार तथा मठों का निर्माण करवाया। नालंदा विश्वविद्यालय को भरपूर सहायता देता था। स्पष्ट है कि वह धर्मपरायण शासक था।

उपरोक्तानुसार विस्तार से लिखने पर पूर्ण 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 9. पृथ्वीराज चौहान, चौहान वंश का महानतम् शासक था। चंदबरदाई ने पृथ्वीराज रासो ग्रंथ में उसकी वीरता का वर्णन किया है। उसने गुजरात के चालुक्य राजा भीमदेव, चंदेल तथा जयचंद से युद्ध किए थे। उसने मुहम्मद गौरी के आक्रमणों का सामना किया। प्रथम ताराइन के मैदान में जीत हुई किन्तु युद्ध में पृथ्वीराज

की हार हुई। जयचंद ने उसकी सहायता नहीं की। युद्ध क्षेत्र में मुहम्मद गौरी ने पृथ्वीराज का वध कर दिया। पृथ्वीराज चौहान की हार के परिणामस्वरूप ही भारत में मुस्लिम सत्ता की स्थापना हुई।

4 अंक

उपरोक्तानुसार विस्तार से लिखने पर 4 अंक पूर्ण प्राप्त होंगे।

अथवा

मामल्लपुरम में इस शैली का विकास होने के कारण इसे मामल्य शैली भी कहते है। इस शैली का काल 625 से 674 ई. माना जाता है। इस शैली के अंतर्गत मुख्यतः मण्ड़पों अथवा रथों का निर्माण हुआ है। मण्ड़पों की संख्या दस है। मामल्य शैली के रथ संप्त पैगोड़ा के नाम से प्रसिद्ध है। इनकी संख्या आठ है। ये महन्द्र वर्मन शैली से अधिक विकसित है।

उपरोक्तानुसार विस्तार से लिखने पर पूर्ण 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 10. औरंगजेब के सिक्खों के संबंध :–

औरंगजेब धर्मान्ध कट्टर सुन्नी मुसलमान था। सिक्ख भी धार्मिक पक्षपात तथा कट्टरता की नीतियों के कारण मुगल साम्राज्य के घोर विरोधी हो गए थे गुरू तेग बहादुर ने औरंगजेब की धार्मिक अत्याचार पूर्ण नीति का विरोध किया था तो उनकी हत्या करवा दी गई थी। इस हत्या से सिक्ख अत्यधिक उत्तेजित हुए तथा गुरू तेग बहादुर के पुत्र गुरू गोविन्द सिंह ने अपने पिता की मृत्यु का बदला लेने नवीन 'खालसा पंथ' की नींव डाली।

औरंगजेब ने सिक्खों के दमन करने के लिए कई बार सेनाएं भेजी परंतु मुगल सेना को पराजय का मुख देखना पड़ा।

औरंगजेब ने गुरू गोविंद सिंह के दोनों पुत्रों को बंदी बना लिया। धर्म परिवर्तन के लिए बाध्य किया और जब उन्होंने धर्म–परिवर्तन से इंकार किया तो दोनों

पुत्रों को जिंदा दीवार में चुनवा दिया गया। इतना सब होने पर भी गुरू गोविंदसिंह ने आत्मसमर्पण नहीं किया।

सिक्ख विरोधी नीति अंत तक मुगल साम्राज्य के पतन का कारण बनीं। क्योंकि वह एक कट्टर पंथी की भांति शासन करने का प्रयत्न किया। प्रत्येक बात में उन्होंने मुस्लिम कानून (शरियत) का अनुसरण करता था। जिससे सिक्खों से औरंगजेब के संबंध ठीक नहीं थे।

4 अंक

उपरोक्तानुसार विस्तार से वर्णन किये जाने पर पूर्ण 4 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

औरंगजेब के विरुद्ध जाटों के संघर्ष :–

औरंगजेब की धार्मिक असहिष्णुता की नीति के विरुद्ध सबसे सशक्त विद्रोह मथुरा के जाटों क था। जिस समय मथुरा के मंदिरों को तोड़कर मस्जिदें बनाई गईं तो जाटों में विद्रोह की ज्वाला धधकने लगीं सन् 1669 में गोकुल जाट ने मुगल फौजदार अब्दुल नबी को मार डाला क्योंकि वह मूर्तियों को तोड़–फोड़कर हिन्दुओं की कन्याओं का अहपरण करता था। औरंगजेब ने निर्ममतापूर्वक दमन किया। गोकुल जाट पकड़ा गया और उसके शरीर के टुकड़े–टुकड़े कर दिए। उसके परिवार के सदस्यों को पकड़कर जबरदस्ती मुसलमान बना लिया गया। 1686 में सिन्सिनी के राजाराम सोधर के रामचेरा ने मुगलों से खुला युद्ध छेड़ दिया युगीर खां को मार डाला। आगरा तक लूट पाट की। सिंकदर पर आक्रमण किया। औरंगजेब की सेना ने राजाराम को मार डाला। राजाराम के बंद उसके भतीजे चूरामन जाट ने जाटों का नेतृत्व किया। उसी ने वर्तमान भरतपुर के राजपरिवार की नींव डाली थी। इस प्रकार औरंगजेब और जाटों के बीच वैमनस्य बढ़ती गई और जाट औरंगजेब के शत्रु बन गए।

उपरोक्तानुसार विस्तार से लिखे जाने पर पूर्ण 4 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 11. पुरंदर की संधि की शर्ते :–

पुरंदर का संधिपत्र शिवाजी के लिए क्षणिक पराजय थी परंतु किसी प्रकार की अंतिम समाप्ति न थी।

राजा जयसिंह ने 1665 में मराठों पर आक्रमण किया। इस युद्ध मे शिवाजी की पराजय हुई। फलतः जयसिंह और शिवाजी के बीच पुरंदर की संधि हुई। 22 जून 1665 में इस संधि की निम्नलिखित शर्ते थी :–

(1) शिवाजी ने बीजापुर के विरुद्ध मुगलों को सैनिक सहायता देने और उनसे युद्ध न करने का वचन दिया।

(2) रायगढ़ के दुर्ग सहित 12 दुर्गों और 1 लाख हूण की वार्षिक आय के प्रदेश शिवाजी के पास हरने दिया गया।

(3) शिवाजी ने अपने 23 दुर्ग और उसके आसपास का प्रदेश जिसकी आय लगभग साढ़े चार लाख हूण वार्षिक थी, मुगलों को दे दिए।

(4) शिवाजी ने मुगल–सम्राट औरंगजेब की अधीनता स्वीकार कर ली।

(5) अपने पुत्र शम्माजी को 5,000 अश्वारोहियों की सेना सहित मुगलों की सेवा में भेजना स्वीकार कर लिया।

(6) मुगल–सम्राट ने शिवाजी को बीजापुर विजय के बाद कोंकण में चार लाख ह्रूण वार्षिक आय का प्रदेश देना स्वीकार किया।

शिवाजी के विरुद्ध–संघर्ष में पुरंदर के किले को घेर लिया ऐसी दशा में शिवाजी को मजबूर होकर पुरंदर की संधि करनी पड़ी थी। इस संधि के अनुसार शिवाजी को अपने 35 दुर्गों में से 23 दुर्ग मुगलों को देना पड़े थे।

4 अंक

संधि के विषय में लिखने पर 1 अंक एवं उपरोक्तानुसार 6 बिन्दुओं को विस्तार से लिखने पर 3 अंक कुल 4 अंक प्राप्त होंगे। 1+3=4

अथवा

चौथे और सरदेशमुखी :– चौथ तथा सरदेश मुखी मराठों द्वरा लिए जाने वाले एक प्रकार के कर थे जिनसे मराठा राज्य को सर्वाधिक आय प्राप्त हुआ करती थी। मराठा राज्य को सबसे अधिक आय उसके शत्रुओं से होती थी। वर्ष में आठ मास शिवाजी की सेना का व्यय–भार किसी न किसी शत्रु क्षेत्र को उठाना पड़ता था। चौथ कुल अनुमानित राजस्व का चतुर्थांश होता था जो शत्रु क्षेत्र से वसूल किया जाता था। इसकी वसूली के लिए बल प्रयोग भी करना पड़ता था। चौथ के समान सरदेशमुखी भी एक–प्रकार का कर था जो कुल राजस्व का 10 प्रतिशत वसूल किया जाता था।

शिवाजी ने जिन राज्यों को अपने राज्य में नहीं मिलाया था, उनसे वह चौथ तथा सरदेशमुखी वसूल करते थे।

भूमि कर से अधिक धन प्राप्त नहीं होता था। अतः उनसे चौथ वसूल करते थे। शिवाजी अपने को महाराष्ट्र का सरदेशमुख मानते थे अतः वे किसानों से उपज का दसवां भाग लेते थे जो सम्पूर्ण राज्य से वसूल किया जाता था। महाराष्ट्र में वर्षा की कमी तथा ऊबड़–खाबड़ क्षेत्रों के कारण कृषि की स्थिति ठीक नहीं थी इसलिए जीविकोपार्जन के लिए मराठों को लूट–पाट करना पड़ता था। मराठे सैनिकों की भर्ति एवं खर्च हेतु शिवाजी ने चौथ और सरदेशमुखी व्यवस्था लागू की थी।

चौथ पर विस्तार से लिखने पर 2 अंक सरदेशमुखी पर 2 अंक कुल 4 अंक प्राप्त होंगे।

उतर 12. भारत में पुर्तगालियों के पतन के चार कारण :–

(1) अलबुकर्क के निर्बल उत्तराधिकारी :– अल्बुकर्क के समान उसके उत्तराधिकारी योग्य तथ प्रतिभावान नहीं थे। वे अत्यंत स्वार्थी तथा निर्बल थे। अपनी आयोग्यता तथा निर्बलता के कारण वे तत्कालीन जटिल समस्याओं का

सामना नहीं कर सके। परिणाम स्वरूप पुर्तगाल साम्राज्य का पतन होना अनिवार्य हो गया।

(2) धार्मिक असहिष्णुता की नीति :– पुर्तगालियों ने भारत में धार्मिक कट्टरता की नीति का पालन किया। हिन्दू और मुसलमान दोनों को ईसाई बनाने का प्रयास किया। धार्मिक असहिष्णुता की एवं कट्टरता की नीति से हिन्दू और मुसलमान दोनों का अपना विरोधी बना लिया।

(3) ब्राजील की खोज – दक्षिण अमेरिका में ब्राजील की खोजकर ली तो पुर्तगालियों ने अपना ध्यान उसे बसाने में लगा दिया।

(4) निर्बल–सामुद्रिक शक्ति – इस काल में इग्लैंड तथा फ्रांस की सामुद्रिक शक्ति का अपूर्ण विकास हो गया था, परंतु पुर्तगालियों की सामुद्रिक शक्ति अत्यंत दुर्बल थी अतः उन्हें अंत में पतन का मुंह देखना पड़ा था। और भारत में धीरे–धीरे पुर्तगालियों का अंत हो गया।

4 अंक

उपरोक्तानुसार 4 कारणों को विस्तार देने पर पूर्ण 4 अंक प्रापत होंगे। बिन्दु के नाम लिखने पर 1 अंक प्राप्त होगा।

अथवा

आधुनिक काल के इतिहास जानने के स्त्रोत :–

1. **कंपनी दस्तावेज एवं अभिलेखीय सामग्री :–** तत्कालीन वायसरायों और भारत सचिवों के अधिकांश निजी कागजात माइक्रो फिल्मों के रूप में ''नेशनल आर्काइव्ज ऑफ इंडिया, नई दिल्ली और नेहरू मेमेरियल म्यूजियम एण्ड लाइब्रेरी नई दिल्ली के पास सुरक्षित है।
2. **निजी दस्तावेज, जीवनी साहित्य तथा संस्मरण :–** निजी दस्तावेजों के अन्तर्गत भारतीय राजनीतिज्ञों एवं देशी रियासतों के निजी दस्तावेज, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की निजी पत्रावलियां आदि। जीवनी साहित्य में महात्मा गांधी

की 'स्टेडी ऑफ माई एक्सपेरिएंस विथट्रूथ, नेहरू की ऐन आटोबायीग्राफी, सुभाषचन्द्र की दि इंडियन स्ट्रगल आदि।

3. **समाचार पत्र एवं पत्रिकाएं :–** तत्कालीन समाचार पत्र एवं पत्रिकाएं भी महत्वपूर्ण स्त्रोत है, उदाहरण – टाइम्स ऑफ इंडिया, मद्रास मेल, पायनियर, द हिन्दू, कॉमनवील, यंग इंडियन, अमृत बाजार पत्रिका, केसरी, आज, इत्यादि।
4. **पुस्तकें :–** आधुनिक भारत, स्वतंत्रता का प्रथम संग्राम, ए नेशन इन मेकिंग, इंडिया टुडे, आज का भारत, आर्य समाज, हिस्ट्री ऑफ इंडिया, नेशनल कांग्रेस इत्यादि आधुनिक काल के इतिहास को जानने के साधन है।

उपरोक्तानुसार विस्तार से लिखने पर पूर्ण 4 अंक प्राप्त होंगे

उत्तर 13. नवपाषाण काल एवं पुरापाषाण काल में अंतर –

क्र.	नवपाषाण काल	पुरापाषण काल
1	मनुष्य ने पशुओं की खालों तथा पौधों के रेशों से वस्त्र बनाना सीख लिया था।	मानव वृक्षों के पत्तों एवं पशुओं की खालों से अपने शरीर को ढ़कता था।
2	मानव ने अपने औजारों को घिसकर चिकना और तेज कर लिया था।	इस युग के औजार बहुत भद्दे भौड़े होते थे।
3	लोक कृष करने लगे थे	मुख्य भोजन कंद मूल फल एवं पशुओं का मांस था।
4	पत्थरों के टुकड़ों से अनाज पीसना सीख लिया था।	गुफाओं एवं नदियों की कगारों में शरण लेता

		था।
5	कताई बुनाई की कला का भी ज्ञान था।	अग्निका अविष्कार कर लिया था।

5 अंक

उपरोक्तानुसार एवं अन्य कोई 5 बिन्दुओ को विस्तार से लिखने पर पूर्ण 5 अंक प्राप्त होंगे। 1+1+1+1+1=5

अथवा

भारत में प्राचीनकाल में यात्रियों के वृत्तीय से उस समय की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक स्थिति का पता चलता है। यूनानी लेखक हेरोडोटस ने 5वीं शताब्दी में, चन्द्रगुप्त मौर्य के समय मेगस्थनीज ने इंडिका मेंडरा समय की रजनीतिक दशा का वर्णन लिखा। चीनी चात्री फाह्यान ने गुप्तकालीन तथा ह्वेंगसांग ने हर्षवर्धन कालीन इतिहास के बारे में लिखा। तिब्बत के बौद्ध लामा तारानाथ द्वारा रचित तंग्यूर नामक ग्रंथ मौर्य काल से संबंधित है। अलबरूनी ने अपनी पुस्तक तहकीक ए हिन्दू में तत्कालीन भारत की विस्तृत जानकारी दी है। **उपरोक्तानुसार विस्तार से लिखने पर पूर्ण 5 अंक प्राप्त होंगे।**

उत्तर 14. मध्यकाल में भक्ति आंदोलन की प्रमुखविशेषताएं :–

(1) एकेश्वर बाद में आस्था :– भक्ति आंदोलन के सन्त अनेक देवी–देवताओं की उपासना करने के बजाय एक ईश्वर में विश्वास करते थे।

(2) जाति प्रथा का विरोध :– भक्ति आंदोलन के सन्त मनुष्य मात्र को एक मानते थे। जाति–प्रथा में आस्था नही रखते थे।

(3) आडम्बरों की उपेक्षा तथा सच्ची भक्ति पर बल :– भक्ति अंदोलन का स्वरूप अत्यंत सरल तथा आंडम्बर हीन था। अंधविश्वास तथा कर्म काण्डों का स्थान नहीं था। उन्होंने कहा था कि भगवान का वास हृदय में है, न कि मंदिर और तीर्थ स्थानों में।

(4) मूर्ति पूजा का विरोध :– भक्त संतों ने मूर्ति पूजा में विशेष रूचि नहीं दिखायी और कुछ संतों ने तो स्पष्ट विरोध किया जिनमें कबीर प्रमुख है।

(5) हिन्दू मुस्लिम एकता पर बल :– भक्ति युग के सन्तों ने हिन्दू–मुस्लिम एकता पर विशेष बल दिया। कबीर ने हिन्दू और मुसलमानों की धार्मिक कट्टरता को समाप्त करने के लिए दोनों की आलोचना की। दीर्घकाल तक हिन्दू और मुसलमान परस्पर निकट रहे जिससे उन्हें एक–दूसरे की भलाईयों और बुराईयों को समझने का अवसर भी मिला वे शांतिपूर्वक प्रेम के साथ एक–दूसरे के साथ रहें।

उपरोक्तानुसार एवं अन्य बिन्दुओं को विस्तार से लिखने पर पूर्ण 5 अंक प्राप्त होंगे। 1+1+1+1+1=5

अथवा

बलवन गुलाम वंश का सर्वश्रेष्ठ शासक निम्न आधार पर कहा जा सकता है :–

1. ताज की शक्ति तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई।
2. 40 मण्डल के सदस्यों का नाश किया।
3. मेवातियों का दमन किया।
4. दोआब के विद्रोहों का दमन किया।
5. मंगोंलों के आक्रमण से रक्षा।
6. उलेमा को राजनीति से पृथक करना।
7. सुदढ़ शासन व्यवस्था की स्थापना की।
8. रक्त एवं लोह की नीति को अपनाया।

उपरोक्तानुसार एवं अन्य बिन्दुओं को विस्तार से लिखने पर पूर्ण 5 अंक प्राप्त होंगे। 1+1+1+1+1=5

उत्तर 15. औरंगजेब ने अपनी दक्षिण नीति के परिणामस्वरूप बीजापूर व गोलकुण्डा को मुगल साम्राज्य में मिला लिया। औरंगजेब ने अपने 50 वर्ष के शासन काल में 25 वर्ष दक्षिण की समस्या सुलझाने में बिता दिए। इस दौरान उत्तर भारत की

ओर उसका ध्यान नहीं रहा और उत्तर भारत में असफलता फैल गई वहां विद्रोह होने लगे जिससे मुगल सत्ता का नियंत्रण कमजोर हो गया। औरंगजेब ने बीजापुर व गोलकुण्डा पर आक्रमण करके भूल की क्योंकि मुस्लिम राज्यों के नष्ट होने से मराठों को अपनी शक्ति बढ़ाने का अवसर मिल गया और औरंगजेब उनका दमन पूर्ण रूप से नहीं कर पाया। मराठों के विरूद्ध सफलता हासिल न कर पाने के कारण मुगल साम्राज्य की प्रतिष्ठा को गहरा आघात पहुंचा। औरंगजेब ने दक्षिण युद्धों के कारण मुगलों की सैन्य शक्ति को बहुत ह्रास हुआ। असंख्य सैनिक मारे गए अनेक बीमार हो गए इससे सेना में निराशा फैल गई। दक्षिण के युद्धों के परिणामस्वरूप औरंगजेब की अर्थव्यवस्था कमजोर हो गई और मुगल राजकोष रिक्त हो गया। दक्षिण के निरंत युद्धों से कृषि व व्यापार को भी नुकसान हुआ। दक्षिण के लम्बे युद्धों से मुगल सैनिक ऊब गए उन्हें समय पर वेतन नहीं मिलता था वे अपने परिवार से दूर हो गए थे इस कारण उनका उत्साह कम हो गया था और सैनिकों के इस असंतोष के कारण सेना की रणकुशलता कम हो गई थी। जिस प्रकार स्पेन के नासूर ने नेपोलियन का विनाश कर दिया, उसी प्रकार दक्षिण के नासूर ने औरंगजेब का विनाश कर दिया। इस प्रकार औरंगजेब की दक्षिण नीति ने औरंगजेब व मुगल साम्राज्य दोनों को ही गहरा आघात दिया।

5 अंक

(उपरोक्तानुसार दक्षिण गति पर संक्षिप्त में लिखने प कुल 5 अंक प्राप्त होंगे–1+1+1+1+1=5)

अथवा

अकबर की राजपूत नीति – अकबर ने अपने साम्राज्य का विस्तार करने के लिए यह समझ लिया था कि राजपूतों के सहयोग से साम्राज्य को स्थिरता प्राप्त होगी। अकबर ने राजपूतों की ओर मित्रता का हाथ बढ़ाया और उनसे वैवाहिक संबंध स्थापित किए। अपने अधीन राजपूत राजाओं से उसने आदर व्यवहार किया और उनके धार्मिक भावनाओं को ठेस नहीं पहुंचाई व उसने राज्य के

उच्च पदों पर राजपूतों को नियुक्त किया। अकबर की इस नीति का प्रभाव कुछ राजपूत राजाओं पर पड़ा।

परिणाम –

1. अकबर की राजपूत नीति के परिणाम स्वरूप राजपूतों का मुगलों से संबंध सौहाद्रपूर्ण हो गए जिससे राजपूतों को निरंतर युद्धों से मुक्ति मिली और वहां शांति की स्थापना हुई।
2. इस नीति के परिणाम स्वरूप राजपूतों पर अकबर का आधिपत्य स्थापित हो गया, इससे उत्तर भारत में राजनीतिक एकता की स्थापना हुई।
3. इस नीति द्वारा अकबर को बहुत लाभ हुआ। बिना किसी परेशानी व खर्च के राजपूतों की विशाल एवं शक्तिशाली सेना उसके अधीन हो गई।
4. इस नीति से राजपूत राजाओं को अपनी योग्यता का प्रदर्शन करने का उचित अवसर मिला।

5 अंक

(उपरोक्तानुसार लिखने पर कुल 5 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 16. **शिवाजी की अष्टप्रधान व्यवस्था :–** शिवाजी को परामर्श देने के लिए एक मंत्री परिषद होती थी जिसमें कुल आठ मंत्री थे यह अष्ट प्रधान कहलाते थे। इनकी नियुक्ति शिवाजी स्वयं करते थे, प्रत्येक मंत्री को एक विभाग सौंपा जाता था जो अपने कार्यों के प्रति उत्तरदायी होते थे। मंत्रीयों से परामर्श लेने के लिए शिवाजी बाध्य नहीं थे उनके अष्ट प्रधान के नाम व कार्य निम्नांकित थे :–

1. **पेशवा या प्रधानमंत्री :–** इसका प्रमुख कार्य राज्य का निरीक्षण करना राजा की अनुपस्थिति में उसका प्रतिनिधित्व करना व प्रशासन का संचालन करना था। केन्द्रीय शासन में राजा के बाद उसका ही स्थान था।
2. **आमात्य :–** आमात्य अर्थ विभाग का प्रधान होता था, जिसे मजूमदार के नाम से भी जाना जाता था। इसका कार्य आय–व्यय का हिसाब रखना व प्रान्त के हिसाब किताब की जांच करना था।

3. **मन्त्री :–** मंत्री राजा के दैनिक कार्य, दरबार की कार्यवाही का विवरण रखना व राजा के गृह प्रबंध का कार्य करता था।
4. **सचिव :–** यह राजकीय पत्र व्यवहार का कार्य करता था व परगनों की आमदनी का ब्यौरा रखता था।
5. **सुमन्त :–** यह वैदेशिक मामलों को देखता था।
6. **सेनापति :–** सैन्य संचालन व सेना की व्यवस्था करता था।
7. **पण्डित राव :–** यह धर्म व दान विभाग का प्रमुख था और राज्य के प्रमुख राजपुरोहित के दायित्वों का निर्वहन करता था।
8. **न्यायाधीश :–** यह मंत्री न्याय विभाग का कार्य करता था।

शिवाजी की अष्ट प्रधान परिषद में सेनापति को छोड़कर सातों मंत्री ब्राम्हण होते थे और उन्हें राजकोष से वेतन दिया जाता था।

5 अंक

(उपरोक्तानुसार शिवाजी की अष्ट प्रधान व्यवस्था पर संक्षिप्त पर लिखने पर 2 अंक, 8 बिन्दु के नाम लिखने पर 2 अंक एवं 6 बिन्दुओं का विस्तार से लिखने पर 3 अंक पूर्ण 5 अंक प्राप्त होंगे–2+3=5)

अथवा

17वीं शताब्दी में शिवाजी के नेतृत्व में मराठा शक्ति का उत्थान हुआ। मराठों ने केवल मुगलों को चुनौती दी बल्कि एक विशाल मराठा साम्राज्य की स्थापना की। मराठों के उत्कर्ष के निम्नलिखित कारण :–

1. **महाराष्ट्र की प्राकृतिक दशा :–** सहायाद्रि पवर्त श्रेणिं की ऊंची चोटियों एवं स्थूल चट्टानों को मराठों ने अपने परिश्रम से सुरक्षात्मक दुर्गो का रूप दिया। इन्हीं दुर्गों की सहायता से मराठों ने उत्तर की ओर से आने वाले आक्रमणकारियों से अपनी रक्षा की।
2. **धार्मिक जाग्रति :–** 15वीं एवं 16वीं शताब्दी की धार्मिक जागृति का प्रभाव महाराष्ट्र पर भी पड़ा। इस धार्मिक जागृति के विचारक एवं नेता गुरूदास,

एकनाथ दामोदर, बामन पण्डित, ज्ञानेश्वर तथा चक्रधर थे। इस धार्मिक जागृति के कारण मराठा सैनिक कर्मयोगी तथा कर्मठ देशभक्त बने।

3. **भाषा की एकता :–** भाषा की एकता से राजनैतिक एवं सांस्कृतिक एकता को बल मिलता है। अतः महाराष्ट्र में भी मराठी भाषा एवं मराठी साहित्य ने लोगों को राष्ट्रीय प्रेम तथा एकता के बन्धन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन्हीं प्रयासों से मराठा जाति एकता के सूत्र में बंधे।
4. **शिवाजी का कर्मठ व्यक्तित्व :–** मराठों के उत्कर्ष में शिवाजी के व्यक्तित्व ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे न केवल एक योग्य सेनापति बल्कि महान राष्ट्र निर्माता भी थे। शिवाजी ने अपनी व्यक्तिगत वीरता, साहसपूर्ण सुयोग्य नेतृत्व कुशल व्यवहार तथा अपने अथक प्रयासों से बिखरी मराठा जाति को एक करके राष्ट्रीयता की भावना का संचार हुआ। सर यदुनाथ सरकार के अनुसार शिवाजी भारत का अन्तिम हिन्दू राष्ट्र निर्माता था। जिसने हिन्दुओं के मस्तक को एक बार फिर ऊंचा उठाया।

5 अंक

(उपरोक्तानुसार शिवाजी के विषय में लिखने पर 1 अंक एवं चार बिन्दु पर वर्णन किये जाने पर 4 अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 17. लार्ड कार्नवालिस ने लगान की स्थायी व्यवस्था कर दी। इस व्यवस्था के अनुसार एक निश्चित लगान पर भूमि सदैव के लिए जमींदारों को दे दी गई। इससे किसानों को कोई लाभ नहीं हुआ। किसान अपने श्रम तथा साधनों से भूमि को उर्वरा बनाते और अधिक अन्न उत्पन्न करते थे किन्तु इसका उनको कोई लाभ नहीं होता था क्योंकि अधिक पैदा होने पर जमींदार उनसे मनमाना लगान वसूल करते थे। कभी–कभी तो किसानों पर इतना लगान थोप दिया जाता था कि वे अपनी सारी कृषि उपज को बेचकर भी नहीं चुका पाते थे। अतः जमींदार उनकी भूमि छीन लेते थे। जमींदार के अन्याय, अत्याचार अथवा कठोरता से बचने का कोई उपाय नहीं था। परिणाम स्वरूप कृषकों की दशा सोचनीय अपमानजनक हो गई थी।

5 अंक

उपरोक्तानुसार विस्तार से वर्णन किये जाने पर कुल 5 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

1784 में इंग्लैण्ड के प्रधानमंत्री ने इंग्लैण्ड की संसद में एक नवीन एक्ट पारित कराया जिसे पिट्स इंडिया एक्ट के नाम से जाना जाता है।

1. भारत में कम्पनी के शासन की देखभाल के लिए छः सदस्यों की एक नियंत्रण समिति की स्थापना की गई।
2. सदस्यों की नियुक्ति व पदच्युति का अधिकार इंग्लैण्ड के सम्राट के पास था।
3. मद्रास एवं बम्बई के गवर्नर पूर्ण रूप से गवर्नर जनरल के अधीन कर दिए गए।
4. कम्पनी के गवर्नरों में से तीन सदस्यों की एक नियंत्रण समिति की स्थापना की गई।
5. भारत के गवर्नर जनरल के परिषद के सदस्यों की संख्या घटाकर चार से तीन कर दी गई।

इस एक्ट ने रेग्यूलेटिंग एक्ट के दोषों को दूर करने का प्रयत्न किया।

उपरोक्तानुसार विस्तार से वर्णन करने पर पूर्ण 5 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 18. सन् 1857 की क्रांति की असफलता के पांच कारण :–

(1) समय के पूर्व प्रारंभ :– क्रांति के लिए 31 मई सन् 1857 की तिथि निर्धारित की गई थी। क्रांति निर्धारित तिथि से पूर्व आरंभ हो गयी थी। क्रांति की चर्बी वाले कारतूसों के प्रयोग की समस्या के कारण 10 मई को ही सैनिकों ने विद्रोह कर दिया। यदि निर्धारित तिथि को ही क्रांति आरंभ होती तो संपूर्ण भारत में इसका एक साथ विस्फोट होता जिससे अंग्रेजों को पराजय का मुख देखना पड़ता।

(2) आधुनिक अस्त्र–शस्त्रों का अभाव :– 1857 की विफलता का प्रमुख कारण क्रांतिकारियों के पास पुराने ढंग से अस्त्र–शस्त्रों का होना था जबकि अंग्रेजों के पास नवीन ढंग की रायफलें तथा तोपें थी जिनकी मार दूर–दूर तक होती थी।

(3) डाक तार विभाग पर अंग्रेजों का नियंत्रण :– भारत की डाक तार व्यवस्था पर अंग्रेजों का ही नियंत्रण था। अतः वे सरलता तथा शीघ्रता से एक स्थान से दूसरे स्थान पर सूचनाएं भेजकर आवश्यक संदेश तथा स्थिति का ज्ञान प्राप्त कर लेते थे। उन्हें क्रांतिकारियों की गतिविधियों की सूचना भी डाक तार द्वारा शीघ्र प्राप्त हो जाती थी। क्रांतिकारियों के पास इस प्रकार के कोई साधन नहीं थे।

(4) कुशल नेतृत्व का अभाव :– वास्तव में कोई भी क्रांतिकारी ऐसा नहीं निकला जो देश के विभिन्न वर्गों के एक झंडे के नीचे इकट्ठा कर सके।

(5) नेपालियों तथा सिक्खों द्वरा अंग्रेजों को सहयोग देना :– नेपाल के गोरखों तथा पंजाब के सिक्खों ने क्रांतिकारियों के सहयोग देने के बजाय क्रांति का दमन करने में अंग्रेजों का साथ दिया। पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त भारतीय 1857 की क्रांति से पृथक हो गए थे। शिक्षित वर्ग का क्रांति से पृथक रहना भी उसकी असफलता का कारण बना।

उपरोक्तानुसार एवं अन्य 5 बिन्दुओं को विस्तार से लिखने पर पूर्ण 5 अंक प्राप्त होंगे। 1+1+1+1+1=5

अथवा

स्वामी विवेकानंद का राष्ट्रीय जागरण में योगदान :

(1) स्वामी विवेकानंद ने हिन्दुओं को अपने धर्म की श्रेष्ठता का ज्ञान कराया तथा उन्हें धर्म के वास्तविक रूप का भी परिचय दिया। वे धर्म के माध्यम से भारतवसियों में अपने राष्ट्र के प्रति जागृति उत्पन्न करना चाहते थे।

(2) स्वामी विवेकानंद ने हिंदूधर्म की श्रेष्ठता को सिद्ध करने के साथ–साथ सभी धर्मों की एकता पर बल देकर भारतीयों में राष्ट्रीय एकता का भाव उत्पन्न करने का प्रयास किया।

(3) विवेकानंद ने धर्म तथ आध्यात्म के आधार पर भारतवासियों को राष्ट्रीयता का पाठ पढ़ाया।

(4) विवेकानंद ने गरीबों की सेवा और उत्थान के कार्यक्रम को पुनः आरंभ कर वस्तुतः प्रत्येक भारतीय को राष्ट्र की सेवा के लिए प्रेरित किया। देश की महानता तथा भारतीयों की एकता को प्रदर्शित कर साधारण जनता की गरीबी और अज्ञान को दूर करने के लिए प्रेरित कर तथा प्रत्येक भारतीय को सबल बनने की सलाह देकर विवेकानंद ने उनमें राष्ट्रीयता की भावना को जागृत किया।

(5) विवकानंद ने भारतीयों को संबोधित करते हुए निर्देश दिया था कि – 'हे बीर, निर्भीक बनो, साहस धारण करो और गर्व के साथ घोषणा करो कि मैं भारतीय हूँ व प्रत्येक भारतीय मेरा भाई है।' विवेकानंद के इस प्रकार के ओजस्वी सम्बोधन ने भारतीयों में राष्ट्र–प्रेम की भावना उत्पन्न की थी।

5 अंक

उपरोक्तानुसार एवं अन्य 5 बिन्दुओं को विस्तार से लिखने पर पूर्ण 5 अंक प्राप्त होंगे। 1+1+1+1+1=5

उत्तर 19. मध्यप्रदेश के स्वतंत्रता संग्राम की प्रमुख गतिविधियां 1857 की क्रांति से ही प्रारंभ होती है। 1857 की क्रांति का प्रारंभ मध्यप्रदेश में महाकौशल क्षेत्र से उस समय हुआ जबकि एक भारतीय सैनिक ने अंग्रेजी सेना के एक अधिकारी पर प्राण घातक हमला किया था।

इसके पश्चात इस क्रांति का प्रारंभ ग्वालियर, इन्दौर , भोपाल, सागर, जबलपुर, होशंगाबाद आदि में भी हुआ। मध्यप्रदेश में 1857 की क्रांति में प्रमुख योगदान देने वाले क्रांतिकारी थी– तात्या टोपे, महारानी लक्ष्मीबई, अवन्ती बाई, राणा बख्ताबर सिंह, शहीद नारायण सिंह तथा ठाकुर रणपाल सिंह आदि।

1857 के प्रमुख क्रांतिकारी में झांसी की रानी लक्ष्मीबाई तथा तात्या टोपे के नाम विशेष उल्लेखनीय है। रानी लक्ष्मीबाई ने देशभक्त विद्रोही सेनिकों का नेतृत्व करते हुए ब्रिटिश सैनिकों को भयभीत कर दिया।

झांसी के हाथ से निकल जाने पर लक्ष्मीबाई अपने साथी तात्या टोपे की सहायता से ग्वालियर पर अधिकार करने में सफल हुई। उन्होंन बड़े उत्साह से ग्वालियर की जनता को जागृत किया। ब्रिटिश सेना ने उनके किले को घेर लिया। वे बड़े ही उत्साह से अपनी सेना का संचालन करती हुई युद्ध क्षेत्र में उतर पड़ी परंतु ब्रिटिश सेना के आघात से वे घायल हुई तथा उनके स्वर्गवास हो गया। उनके सामने ही तात्या टोपे ने मध्यप्रदेश के अनेक क्षेत्रों में सफलतापूर्वक ब्रिटिश सेनाओं से युद्ध किया परंतु एक विश्वासघाती षड़यंत्र के कारण अंग्रेजों ने उसे बंदी बनाकर फांसी पर चढ़ दिया था। यद्यपि 1857 की क्रांति असफल हो गयी थी परंतु यह सत्य है कि मध्यप्रदेश में इस क्रांति की व्यापकता ने यहां की राष्ट्रीयता की भावना को उच्च स्तर पर पहुंचा दिया था।

5 अंक

उपरोक्तानुसार एवं अन्य बिन्दुओं पर विस्तार से लिखे जाने पर पूर्ण 5 अंक प्राप्त होंगे।

अथवा

म.प्र. में स्थित गुप्तकालीन प्रमुख स्मारकों का परिचय निम्नांकित है :–

1. **भूमरा का शिव मंदिर :–** गुप्त काल भूमरा का शिव मंदिर वास्तुकला का अनुपम नमूना है। म.प्र. के सतना जिलें में भूमरा नामक स्थान पर गुप्तकालीन शिव मंदिर प्राप्त हुआ है।
2. **तिगवा का विष्णु मंदिर :–** तिगवा का विष्णु मंदिर गुप्तकालीन वास्तुकला का सुन्दर नमूना है। म.प्र. के जबलपुर जिले में तिगवा नामक स्थान पर गुप्तकालीन विष्णु मंदिर प्राप्त हुआ।

3. **नचनाकुठार का पार्वती मंदिर :–** म.प्र. में पन्ना जिले में अजयगढ़ के समीप रचना कुठार नामक स्थान है। यहां पार्वती का मंदिर है।
4. **एरण का विष्णु मंदिर :–** म.प्र. सागर जिले के ऐरण नामक स्थान से गुप्तकालीन विष्णु मंदिर के अवशेष मिले है।
5. **सांची का मंदिर :–** म.प्र. में सांची का मंदिर अत्यंत प्राचीन बताया जाता है यह मंदिर प्रारंभिक गुप्त परम्परा में महत्वपूर्ण मंदिर है।
6. **उदयगिरि की गुफाएं :–** म.प्र. के विदिशा जिले में उदयगिरि की 20 गुफाएं स्थित है। ये गुफाएं गुप्तकालीन, स्थापत्य कला का अनुपम उदाहरण है। इन गुफाओं को उदयगिरि की पहाड़ियों की पूर्वी ढाल को खोदकर तराशा गया है।
7. **बाघ की गुफाएं :–** म.प्र. के विन्ध्याचल की पहाड़ियों में बाघ की गुफाएं स्थित है।
8. **पिपरिया का विष्णु मंदिर :–** म.प्र. के सतना जिले में उचेहरा के पास पिपरिया नामक स्थान पर विष्णु मंदिर है।
9. **कन्दरिया महादेव का मंदिर :–** यह मंदिर खजूराहों में स्थित है।
10. **भरहुत का स्तूप :–** म.प्र. के सतना जिले में है। यह अशोक द्वारा बनवाया गया।
11. **सांची का स्तूप :–** सांची का स्तूप म.प्र. के रायसेन जिले में है। इसको अशोक द्वारा बनवाया गया था। इसमें महात्मा बुद्ध के दो शिष्यों के अवशेष है।
12. **भर्तुहरि गुफाएं :–** म.प्र. के उज्जैन जिले में बालियादेह महल के पास में है। राजा भर्तुहरि की स्मिृति में परमार देश के शासकों ने बनवाया था।

(उपरोक्तानुसार एवं अन्य 10 बिन्दुओं को विस्तार देने पर प्रत्येक पर ½ अंक कुल 5 अंक प्राप्त होंगे)

उत्तर 20. 22 अक्टूबर 1764 को अंग्रेजों तथा अवध के नवाब शुजाउद्दौला मीर कासिम तथा मुगल सम्राट के बीच में हुए युद्ध में अंग्रेजो की विजय हुई और दोनों पक्षों के बीच सन् 1765 में इलाहबाद की संधि हुई। जिसकी प्रमुख शर्तें इस प्रकार है:–

1. अंग्रेजों को बंगाल, बिहार, उड़ीसा की दीवानी प्राप्त हुई।
2. कड़ा इलाहबाद के जिलों को छोड़ शेष अवध नवाब को सौंप दिया गया।
3. अंग्रेजी सेना संधि की शर्तें पूरी होने तक अवध में रहेगी, जिसका व्यय नवाब देगा।
4. नवाब 50 लाख रूपये क्षतिपूर्ति के रूप में कंपनी को देगा।
5. कंपनी को अवध में बिना कर दिए व्यापार निश्चित की छूट मिल गई।
6. मुगल सम्राट की पेंशन 26 लाख रूपये निश्चित कर दी गई।

महत्व :–

इलाहबाद की संधि में प्लासी के अधूरे कार्य को पूरा किया।

1. अंग्रेज अब वास्तविक तथा कानूनी रूप से बंगाल के स्वामी हो गए।
2. अवध का उपजाऊ समृद्ध प्रदेश अब अंग्रेजों की दया पर था।
3. कंपनी के कड़ा इलाहबाद के उपजाऊ जिले प्राप्त हो गए।
4. मुगल सम्राट कंपनी का पेंशनर बन गया इससे कंपनी की प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई।
5. कंपनी उत्तर भारत की निविर्वाद ताकत बन गई।

(उपरोक्तानुसार इलाहाबाद की संक्षिप्त शर्त पर लिखने पर 3 अंक एवं महत्व पर 3 अंक कुल 6 अंक प्राप्त होंगे)

अथवा

प्लासी का युद्ध 25 जून 1757 ई. में हुआ था। इस युद्ध के निम्नलिखित कारण थे :–

1. **सिराजुद्दौला का अनिश्चित उत्तराधिकार :–** अलीवर्दी खां के तीन पुत्रियां थी परंतु पुत्र एक भी नहीं था। अलीवर्दी खां ने अपनी सबसे छोटी बेटी के

पुत्र सिराजुद्दौला को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया था। अतः उसकी अन्य पुत्रियों तथा उनके पुत्र उसके विरोधी हो गये। अलीवर्दी खां. के स्वर्गवास के पश्चात उसकी पुत्री घसीटी बेगम गद्दी प्राप्त करने का प्रयास करने लगी। अंग्रेजों ने भी इस संघर्ष का लाभ उठाने का प्रयास किया।

2. **अंग्रेज तथा हिन्दू व्यापारियों का गठबन्धन :–** अंग्रेज हिन्दू व्यापारियों से संपर्क स्थापित कर उन्हें आश्वासन दे रहे थे कि यदि बंगाल की बागडोर उनके हाथों मे आ जायेगी तो उन्हें अनेक व्यापारिक सुविधाएं देंगे।
3. **व्यापारिक सुविधाओं का दुरूपयोग :–** कंपनी के अधिकारियों ने व्यापारिक अनुमति पत्र भारतीय व्यापारियों से रिश्वत लेकर उन्हें बेच दिये थे। भारतीय व्यापारी भी मुक्त व्यापार करके सरकार की आय पर आघात करने लगे। इससे सिराजुद्दौला को गहरा आघात लगा। फलस्वरूप उसकी आर्थिक दशा दयनीय हो गई।
4. **सिराजुद्दौला के विरोधियों को अंग्रेजों की सहायता :–** बंगाल में अलीवर्दी खां के काल में ही यह अफवाह फैल गई थी कि अंग्रेज सिराजुदृदौला के विरूद्ध घसीटी बेगम का समर्थन कर रहे है। अतः सिराजुद्दौला के ह्रदय में अंग्रेजों के विरूद्ध शंकाएं तथा कटुता की भावनाएं उत्पन्न होने लगी।
5. **अंग्रेजों द्वारा किलेबन्दी करना :–** अंग्रेजों ने फ्रांसीसियों से संघर्ष करने के लिये बंगाल मे किले बन्दी आरंभ कर दी थी। सिराजुद्दौला ने किलों को गिराने का आदेश दिया परंतु अंग्रेजों ने इस आदेश की अवहेलना की। इससे अंग्रेजों और सिराजुद्दौला के मध्य मतभेद और बढ़ गया।
6. काल कोठरी (ब्लैक होल) की घटना :– सिराजुद्दौला ने अनेक अंग्रेज बन्दियों को एक तंग कोठरी में बंद कर दिया था। दम घुटने के कारण अनेक अंग्रेज बन्दी मर गये। यह घटना ही **''काल कोठरी''** के नाम से प्रसिद्ध है। इस घटना को सुनकर मद्रास के अंग्रेज अधिकारी भड़क गये तथा उन्होंने 1756 ई. में कलकत्ता पर अधिकार कर लिया।

प्लासी के युद्ध के निम्न परिणाम निकले :–

1. प्लासी के युद्ध के पश्चात बंगाल पर अंग्रेजों का पूर्ण नियंत्रण स्थापित हो गया।
2. प्लासी के युद्ध के पश्चात बंगाल में ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कंपनी के गौरव में वृद्धि हुई।
3. प्लासी के युद्ध ने अंग्रेजों को भारत विजय के लिए और अधिक प्रोत्साहित किया।
4. फ्रांसीसियों की शक्ति को गहरा आघात लगा।
5. प्लासी के युद्ध के पश्चात कंपनी को बंगाल, बिहार और उड़ीसा में स्वतंत्र व्यापार करने की छूट मिल गई।

उपरोक्तानुसार 6 बिन्दुओं या अन्य बिन्दुओं पर विस्तार देने पर कुल 6 अंक प्राप्त होंगे।

उत्तर 21. मार्च 1947 में लार्ड माउन्टबेटन को भारत का वायसराय नियुक्त किया गया। 3 जून 1947 ई. को एक योजना की घोषणा की जिसे माउन्टबेटन योजना के नाम से जाना जाता है। यह मूल रूप से भारत के विभाजन की योजना थी। अंग्रेजों द्वारा भारतीयों को सत्ता हस्तांतरित की जानी थी।

मुख्य बातें :–

1. भारत का शासन ऐसी सरकार को सौंद दे, जिसका निर्माण जनता की इच्छानुसार हुआ हो।
2. संविधान सभा अपना कार्य जारी रखे।
3. पंजाब व बंगाल का विभाजन।
4. उत्तर–पश्चिमी सीमा प्रान्त में जनमत द्वारा निर्धारण किया कि वह भारत के किस भाग के साथ रहेंगे।
5. असम के सिलहट जिले में भी जनमत के द्वारा निर्धारण।

6. पंजाब बंगाल और असम में विभाजन के पश्चात आयोग द्वारा सीमा का निर्धारण।
7. देशी रियासतों को भारत या पाकिस्तान के साथ मिलने की छूट या स्वतंत्रता रहे।
8. भारत और पाकिस्तान को राष्ट्र मंडलि त्यागने या स्वीकार करने का अधिकार।
9. भारत और पाकिस्तान के मध्य लेनदारियों और देनदारियों को विभाजन करने का समझौता होगा।

कांग्रेस के प्रारंभिक विरोध के पश्चात स्वीकार कर लिया। वामपंथी दलों ने इस योजना की आलोचना की, मुस्लिम लीग भी संतुष्ट नहीं थी।

4 जुलाई 1947 ई. को इंग्लैण्ड की संसद द्वारा ''भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम पारित किया। इस प्रकार 15 अगस्त 1947 ई. को भारत विभाजन के पश्चात भारत और पाकिस्तान राष्ट्र स्थापित हुआ।

5 अंक

उपरोक्तानुसार एवं अन्य 6 बिन्दुओं को विस्तार से लिखने पर पूर्ण 6 अंक प्राप्त होंगे। 1+1+1+1+1+1=6

अथवा

भारत छोड़ों आन्दोलन के कारण एवं परिणाम –

कारण –

1. **क्रिप्स मिशन से निराशा –** भारतीयों को लगने लगा कि क्रिप्स मिशन भारतीयों को धोखे में रखने के लिए एक नई चाल चली गई थी। इससे भारतीय असंतुष्ट थे।
2. **शोषण और अत्याचार –** ब्रिटिश शासन के अधीन भारतीय सदैव अत्याचार और शोषण के शिकार हुए, फलतः वे आन्दोलन करने के लिए विवश हुए।
3. **वर्मा ने भारतीयों पर अत्याचार –** वर्मा में भारतय सैनिकों के साथ किए गए दुर्व्यवहार से भारतीयों के मन में आंदोलन करने की तीव्र भावना जागृत हुई।

4. **जापानी आक्रमण का भय –** द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान जापान की सेनाएं रंगून तक पहुंच चुकी थी। लगता था कि वे भारत पर भी आक्रमण करेंगी।

परिणाम –

1. इस आंदोलन ने ब्रिटिश सरकार को भारतीय जनजागरण की शक्ति का आभास दिया।
2. इस आंदोलन ने अन्तर्राष्ट्रीय जनमत को इंग्लैण्ड के विरूद्ध जागृत किया।
3. यह आन्दोलन आम जनता का आन्दोलन था। इसमें जमींदार, युवा, महजूद किसान और महिलाओं ने बढ़चढ़ कर भाग लिया।
4. इस आंदोलन ने भारतीयों के लिए पूर्ण स्वतंत्रता की भूमिका तैयार कर दी।

(उपरोक्तानुसार वर्णन को लिखे जाने पर 3+3=6 अंक प्राप्त होंगे)

– – – – – – – – –